International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव का अध्ययन करना।

अबधेश सिंह

प्रस्तावनाः—

भारत को प्राचीन काल में विश्व गुरू की उपमा दी जाती थी। इसका कारण यहॉ ज्ञान, विज्ञान, तथा सांस्कृतिक कार्यों के साथ संस्कारों की प्राचीनतम धरोहर मौजूद है। इस प्राचीनतम शिक्षा तथा शिक्षण व्यवस्था का जन्म भारत मै ही हुआ, भारत मै शिक्षा का व्यवसायीकरण के साथ—साथ उपलब्धता का स्तर पर्याप्त रहा है। मानव जीवन में शिक्षा अनवरतरूप से निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया रही है। जिससे मानव नये नये सृजनात्मक कार्य को धारण करता रहा और अपना विकाश करता रहा है।

सृजनात्मक कार्य के लिये संबंधित साहित्य की उन पुस्तकों, पत्र—पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध ग्रंथों,संचार के साधनों से है जिनके प्रभाव से वह अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निमार्ण एवं अध्ययन की रूप रेखा को निश्चित करता हैं इन संचार के साधनों में दूरदशन सवसे प्रभावी साधन हैं। जिससे व्यक्ति की आदत, आकांक्षा, मूल्य आदि पर गहरा प्रभाव पढता है।

स्काट और मार्थर के शब्दों में :—''साहित्य सर्वेक्षण समस्या के बारे में नया ज्ञान देना और अनावश्यक सामग्री से बचाने में सहायता प्रदान करता है।''

पाठक एवम् सिंह (1986) ने बच्चों के द्वारा टेलीविजन देखने तथा उन पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित अध्ययन किया और पाया कि

1. टेलीविजन बच्चों के सामान्य ज्ञान को बढ़ाने में मदद करता है।
2. 23 प्रतिशत अभिभावकों ने यह महसूस किया कि टेलिविजन उनके बच्चों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है जब कि 42 प्रतिशत अभिभावक इस तथ्य से सहमत नहीं थे।
3. 33 प्रतिशत अभिभावकों का मानना था कि कुल मिलाकर टेलीविजन बच्चों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। जबकि 52 प्रतिशत अभिभावक इस सम्बन्ध में अनिश्चित थे।
4. 73 प्रतिशत अभिभावकों का मानना था कि टेलोविजन उनके बच्चों के लिए स्वस्थ वातावरण प्रदान करता है। 90 प्रतिशत अभिभावकों का मानना था कि टेलीविजन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उनके बच्चों को स्वस्थ वातावरण प्रदान नहीं करता है। जबकि 18 प्रतिशत अभिभावक इस मुद्दे पर अनिश्चित थे।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

शोधकर्ता ने शोध हेतु निम्न उददेश्यों का निर्धारित किया–

1. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शहरी–ग्रामीण स्नातक विद्यार्थियों की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाऐं :–

प्रस्तुत शोध कार्य में शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो निम्नवत है।

1. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. शहरी–ग्रामीण स्नातक विद्यार्थियों की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध विधि :–

चूंकि यह शोध म्उचमतपबंस स्वाभाव का है। अतः वर्णनात्मक अनुसंधान कम घटनोत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु 100 स्नातक विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है

उपकरण– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने डॉ प्रदीप कुमार तथा डॉ अजीत कुमार शंखधर द्वारा निमित और नेशनल साइकोलॉजीकल कारर्पोरेशन आगरा द्वारा मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया है ।

परिसीमांकन– प्रस्तुत शोधकार्य जनपद फिरोजावाद के टूण्डला तहसील के महाविद्यालयों के 100 स्नातक विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है ।

प्रयुक्त सांख्यिकी– प्रस्तुत शोध में केन्द्रिय प्रबृत्ति की माप तथा प्रमाप विचलन का प्रयोग किया है।

सांख्यिकी विश्लेषण– शोधकर्ता ने ऑकडे एकत्रित कर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया ।

सारणी –1

शहरी			ग्रामीण		
छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
25	25	50	25	25	50

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी –2

परिकल्पना–1:– स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

क्रम सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की सं.	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
1.	शहरी–ग्रामीण छात्र	50	27.84	5.13	1.92
2.	शहरी–गामीण छात्रायें	50	26	4.53	

Df 98* पर परिगणित t=1.92, मान 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.63 दौनों ही से कम है अर्थात नगण्य है। यह सार्थक अन्तर नही है । अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्व होती है। तथा स्वीकार की जाती है। अर्थात दौनों पर समान प्रभाव पडता है।

सारणी–3

परिकल्पना–2:–शहरी–ग्रामीण स्नातक विद्यार्थियों की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सामाजिक पृष्ठ भूमि के कार्यकमों के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

कम सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की सख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1.	शहरी विद्यार्थी	50	26.78	5.72	2.24
2.	गामीण विद्यार्थी	50	24.36	5.08	

क्योकि परिगणित t=2.24 का मान, df =98 के लिये t .05=1.98 से अधिक परन्तु t .01=2.63 से कम है। अतः यह मान .05 स्तर स्तर पर तो सार्थक है। परन्तु .01 स्तर पर सार्थक नही है। अतः .05 स्तर पर तो शून्य परिकल्पना निरस्त की जा सकती है। परन्तु ण्01 स्तर पर निरस्त नही की जा सकती है।

उपरोक्त परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कष निकालते है। कि यदि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को अभिभावकों के उचित निर्देशन में टी. वी. कार्यकमों कों दिखाया जाता हैं तो विद्यार्थियों की वाणिज्यिक व्यवसायिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पढता है।

सुझाव–प्रस्तुत शोध का भविष्य इस प्रकार से विस्तार कर सकते है।

1.प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर।

2.उच्च स्तरीय विद्यार्थियों पर ।

3.विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों पर।

4.विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों पर ।

संदर्भ सूची–

1.भटनागर, डॉ आर.पी.–शिक्षा अनुसंधन, लायल बुक डिपो, मेरठ.

2.गुप्ता,डॉ एस.पी.–आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद.

3.अरूण कुमार–मनोविज्ञान,समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ,मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली.

4.शिक्षामित्र,6(1)सितम्बर–2013,RNI UPBIL/2008/28046.ISSN N0- 0976-3406.

5.**Pathak, A.B. & Singh V.V. (1986)** Television and Studentents. Journal of Indian Education, Sep. 1986, 12(3), pp. 39-43